।। सुख विलास ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सुख विलास ग्रंथ लिखंते ||

|| दोहा ||

प्रथम बन्दन गुरू देवजी || जिण दियो नांव ततसार ||
दुतिये बन्दन रामजी || जां मेटया भ्रम बिकार ||१||

गुरुदेवजी ने मेरे घटमे तत्तसार नाम प्रगट किया इसलिये गुरुदेवजी को सर्व प्रथम प्रणाम है प्रणाम है । रामजी मेरे घटमे रोम रोम मे प्रगट हुये व प्रगट होकर मेरे भ्रम व विकार मिटा दिये इसलिये द्वितीय प्रणाम घटमे रोम रोम मे प्रगट हुये वे रामजी को है ।।।१।।

तृतिये बंदन सब संत जन || अनंत कोट जन सार ||
जां की पद रज प्रसता || हंस उतर जावे पार ||२||

तिसरी वंदना जिनके पैरो के धुलका स्पर्श होते ही जीव भवसागर से पार उतर जाता है ऐसे अनंत कोटी सभी सतस्वरुपी संतजनको है ।।।२।।

चोपाई ||

अनन्त कोट दासन के दासा || बरणु भक्त जोग अरू सुख बिलासा ||
शब्द सुण्या सत्त गुरू का बेणा || देख्या सकल आपका नेणा ||३||

जिनके चरण रज स्पर्श मात्र से हंस भवसागर से पार हो जाता है ऐसे अंनत कोटी सार रुपी संतोके दासो का मै दास हुँ । मै मेरे सतगुरु रामजी एवम् सार रुपी अनंत कोटी संतोके कृपा से भक्ती जोग साधते वक्त हुआ वा सुख विलास वर्णन करता हुँ । मैने सतगुरु के मुखसे तत्तसार शब्द सुणा व मैने धारण किया । जिसमे भक्ती योग का सुखविलास का पर्चा घटमे हुआ वह पर्चा मैने आँखोसे देखा ।।।३।।

देखी कऊं सुणी नही मानुं || सत्त गुरू शब्द सकल घट जानुं ||
पेली शब्द सरवणा आवे || जब तो मन मे हरक बधावे ||४||

सुखविलास का पर्चा मैने खुद ने अनुभव किया वह मै आप सभी को बता रहा हुँ । इसमे अन्योने कहा हुआ जरासा भी अनुभव नही है कारण मै स्वयंम के अनुभव सिवा दुजो के अनुभव मैने अनुभव किया यह कहना मै जरासा भी मंजुर नही करता । मै मेरे घटमे सतगुरु से प्रगट हुवा वा शब्द पुरे घटमे अनुभव कर रहा हुँ । मैने सतगुरुके मुखसे शब्द प्रथम कानसे सुणा तब मेरे मनमे बहोत खुषी हुअी ।।।४।।

ऊठत बेठत सास उसासा || रसणा राम रटिया निस वासा ||
निरत नेण ठेरावत नासा || सुरत पकड़ तोलत हे सासा ||५||

मैने वह तत्तसार राम शब्द साँस उसांस मे उठते बैठते रातदिन रसनासे रटा । मैने मेरी निरत मेरे नाक के उपरी चोटी पर ठहराई व मेरी सुरत सांस उसांस पे लगाई । यह मेरी सुरत सांस उसांस को बराबरी से तोलने लगी ।।।५।।

तोलत सास चले ज्यूं चकरी || ता संग सुरत लगी ज्यूं मकरी ||
मनवा करे पवन सुं मेला || सुरत शब्द दोनुं होय भेळा ||६||

जैसे मक्री उसने बुने हुये जाल के धागे पे उतरती व चढती वैसी मेरी सुरत सांस तोलने के लिये उसांस पे उतरती व सांस पे चढती व सांस को बराबर है या नही यह तोलकर सांस उसांस को बराबर करती । मुझे सतगुरु ने दिया हुआ सार शब्द व मेरा सांस उसांस मेरा मन व मेरी सुरत इनको यह पवन एक कर मै भक्ती योग साधता हुँ ।।।६।।

आ साजन रसणा गुण गावे ।। इम्रत चाख बोहोत सुख पावे ।।
गले गिल गिली हुवे चमकारा ।। इम्रत उतरे बारम्बारा ।।७।।

मै इसप्रकार की साधना साधकर राम नामका स्मरण करता हुँ । इस भक्ती योग साधनासे मुझे रामनाम रुपी अमृत चखनेका बहोत सुख मिलता है । मेरे गलेमे गुदगुदियाँ होकर तनमे चमकार होती है । गलेसे बारबार अमृत उतरते रहता है ।।।७।।

इम्रत सीर चले इक धारा ।। उपज्या प्रेम भया पतियारा ।।
भई प्रतित रटया नित रामा ।। रात दिवस नही पल बिश्रामा ।।८।।

गलेसे बार बार अमृत की धार एक जैसे चलने लगी । अमृत की धार से मुझे बहोत सुख मिलने लगा व मुझे घटमे प्रेम आने लगा व मुझे मै भवसागर से पार उतर जाऊँगा इसका भरोसा हो गया । मै नित्य रामनामकी रटन करने लगा फिर रात दिन एक पलभर भी विश्रांती न करते रटन करने लगा ।।।८।।

झमक झमक नाड़ी सब झमके ।। चमक चमक मनवो उर चमके ।।
सीतल लेहर सकल तन कांपे ।। रात दिवस निद्रा नही झांपे ।।९।।

फिर सारे शरीर की सभी नाडीयाँ झमक झमक इस प्रकार से झमकने लगी व मन उरमे चमक चमक याने डरकर चमकने लगा । सारे शरीर मे ठंडी लहर मालुम पडने लगी व थंडीसे जैसा शरीर काँपता वैसा मेरा सारा शरीर काँपने लगा व मै रातदिन रटन करने लगा व मुझे निद्रा जरासी भी नही झांपती थी ।।।९।।

गद गद बाणी सिस के सासा ।। नेणा नीर चवे चोमासा ।।
चाले बेल पिवे कंठ क्यारी ।। फूल्या कंवळ पांखडी च्यारी ।।१०।।

(कंठ से)गद-गद ऐसी वाणी होकर,श्वास सिसकने लगी ।(उश्वास आने लगी)और आँखो से बारीष के जैसा पानी बहने लगा । और मुँह से राम ध्वनी का(दांड)क्यारी चलने लगा । वह क्यारी,कंठ की क्यारी में,कंठकी क्यारी पीने लगा । कंठ में चार पंखुड़ीयों का कमल उगाया । ।।१०।।

तां का वरण पेड हे पीला ।। तां पर साम पांख तल लीला ।।
बीचे लाल सेत हे पंखियां ।। आ देखे साध सुरत की अखियाँ ।।११।।

उस कमल का रंग उसका पेड़ तो पीला और उसके उपर काला है । और पंखुड़ीयाँके निचे हरा रंग है और उस कमल के बीच लाल होकर,पंखुडीयाँ उपर सफेद है । यह मैं सुरत की आँखों से देखा । ।। ११ ।।

रसना राम रटिया अेक मासा ।। जब हिरदा में भया प्रकासा ।।
भया प्रकास कंवळ ज्या फूल्या ।। प्रेम होद मे हंसा झूल्या ।।१२।।

(शब्द कंठ में आने के बाद),एक महीना तक,मैंने जीव्हा से राम नामकी रटन की,तब हृदय में प्रकाश आया। हृदय में कमल खिला। और फिर हंस(मेरा जीव)प्रेम के हौद में,प्रेम से झूलने लगा । ।। १२ ।।

हंस लव लिन प्रेम जळ भीना ।। मग्न भया मन ज्यूं जल मीना ।।
चाले बेल भरीजे ताळी ।। सीचे कंवळ सुरत बन माली ।।१३।।

हंस(जीव)उस प्रेम मे ऐसा लवलीन हो गया,कि जैसे पानी में मछली मग्न हो जाती है । उसी प्रकार मेरा हंस(जीव)मग्न हो गया । (वहाँ से राम नामके)ध्वनी का दांड चलता है । उस दांड से सभी हृदय का(ताली)यानी सारा हृदय भर जाता है । उस हृदय के कमल को,सुरत रूपी वनमाली पानी देता है । ।। १३ ।।

स्याम सेत जरदी रंग बीचे ।। हरिया बरण पांख के नीचे ।।
आष्टा पांख बरण हे लाली ।। देख्या कंवळ भई कुसयाली ।।१४।।

उस हृदय के कमल में काला और सफेद कमल का रंग है। और कमल के रंग में पीला है। और कमल की पंखुड़ीयाँके नीचे हरा रंग है। उस हृदय के कमल को आठ पंखुड़ीयाँ है। उस कमल का रंग लाल है। वह हृदय का आठ पंखुड़ीयों का कमल देखकर,मैं खुश हुआ ।।१४ ।।

दीरघ पेड़ पांखड़ी लघुता ।। हिरदा कंठ कंवल की जुगता ।।
घठ फेरे चकरी के नाइं ।। पल पल रोज कंवळ बिग साइं ।।१५।।

उस कमलका पेड़ बड़ा है और पंखुडीयाँ छोटी है । उस हृदयके कमलमें कंठके कमल जैसी युक्ती है । घट चकरी जैसा घूमता है,प्रति-दिन,पल-पलमें कमल प्रफुल्लीत होता है ।।।१५।।

रात दिवस घूमे मन मन मांहि ।। आ अेनाणा हिरदे जाई ।।
दस बीस दिन हिरदे ध्याना ।। अब धरणी कूं किया पयाना ।।१६।।

यह रात-दिन मन तो घुमता है,इस प्रकार के हिंदान से हृदय में जाता है। इस प्रकार से एक महिना हृदय ध्यान किया। और अब धरणी पर जाने के लिए प्रस्थान किया। ।।१६।।

हिरदा नाभ बिचे षट कंवळा ।। पीवत बेल भया सब संवळा ।।
फूटे बास चऊँ दिस जावे ।। पिच रंग पांख भंवरे बिल मावे ।।१७।।

हृदय के और नाभीके बीचमें छः कमल है। वह ध्वनीका(दांड)पीकर,सभी कमल(सुलटे) खिल गये,उनकी सुगंधी फूटकर चारो दिशाओं में जाती है। वे कमल पंचरंगी है। उनकी पंखुडी पर भंवर(यह जीव)उलझकर भूल जाता है। ।। १७ ।।

पांच कंवळ पांचू रंग जाणे ।। छटा कंवळ रंग कूण पिछाणे ।।

केसा वरण पांखड़ी केती ।। ले दिपग देखो कर सेती ।।१८।।

ये पाँच कमल,पाँच रंग के है । ऐसा समझने में आ रहा है । परन्तु छठवे कमल का रंग कौन पहचानेगा ।(उस छठवे कमल का रंग सतगुरूजी महाराजने बताया ही नही । कारण दूसरा कोई बतायेगा,की कमल का रंग मुझे मालुम पड़ता है,तो ऐसा बोलने वाले से पूछने के लिए, इस कमल का रंग न बताते हुए,इस ग्रंथ में बिना बताए,ही रखा ।)उस कमल का रंग कैसा है ?और इस कमल को पंखुडीयाँ कितनी है?(इसमें कमल को सोलह पंखुडीयाँ है,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज ने,दूसरी जगह पर वर्णन किया है,परन्तु इसका रंग कही भी नही बताया है। इस कमल का रंग,गुरू के ज्ञान का दीपक,हाथ में लेकर देखो। ।। १८ ।।

अब तो शब्द नाभ कूं चाल्यो ।। जब क्रमा पर घेरो घाल्यो ।।
नाभ कंवळ ऊठयो गरणाई ।। बहोतर नाड़ी बीण बजाई ।।१९।।

अब(उसमें से कमल में से),शब्द नाभीमें जाने लगा। तब सभी कर्मोके उपर घेरा डाल दिया। नाभी का कमल गर्जना करते हुए उठा। वह नाभी का कमल जब उठा,तब बहत्तर नाड़ीयाँ वीण बजाने लगी । ।। १९ ।।

बाजे बिण झीण पद गावे ।। प्रेम कलष ले पीव बधावे ।।
भंवर गुंजार गिगन धुन गाजे ।। रूम रूम मे बाजा बाजे ।।२०।।

उनका(बहत्तर ही नाड़ीयों की)वीण बजता है । और बारीक सूर से बहत्तर ही नाड़ीयाँ पद गाने लगी । और प्रेमका कलश लेकर,पती की बधाई यानी समक्ष सम्मान करते । वहाँ भवरे की गुंजारकी ध्वनी होती है । और गुंजार से गगन में भी ध्वनी बजने लगती और रोम–रोम से बाजे बजने लगते । ।। २० ।।

अमृत बेल बहे जल धारा ।। आतम बाग पीवे बन सारा ।।
हरी पांख तळ पेड़ सुरंगा ।। संग जरदी शिर सेत प्रसंगा ।।२१।।

वहाँ से अमृत के पानी की धार बहने लगती है । उस धारा से आत्मा रूपी बाग और वन सब पीने लगते,वहाँ नाभी में कमलके नीचे की,पंखुड़ीयों के नीचे हरा रंग है । और पेड़ पीला है । और उसके साथ ललाई(लालवट)और पंखुड़ी के उपर,सफेद रंग की रेखा है । ।। २१ ।।

बीचे स्याम भंवर तां भणके ।। नाड़ नाड़ न्यारी सब झणके ।।
पांख बतीस नाभ दल फूले ।। जां अेक गली गुपत की खूले ।।२२।।

और कमल के बीच में,काला भवरा भणकार करता है,(गुंजार करता है)। और नाड़ी–नाड़ी (नव सौ नाड़ीयाँ),सभी में अलग झनकार हुयी,नाभी में बत्तीस पंखुड़ी का कमल खिलता, उसमें से एक गली(जाने का रास्ता),गुप्त खुलता है । ।। २२ ।।

ऊँची दिष्ट कंवळ अेक दरसे ।। पांख पचीस बरण अेक सरसे ।।

षोडस भंवर गेण गरणाया ।। द्वादश वर्ष नाभ मे ध्याया ।।२३।।

उपर दृष्टी करने पर,एक कमल दिखाई पड़ता है । उस कमल को पच्चीस पंखुडीयाँ है और उस सभीका रंग,एक जैसा ही है । सोलह भवरे उपर गुंजार करने लगे । मैं बारह वर्ष तक नाभी का ध्यान किया । ।। २३ ।।

दोय कंवळ देख्या तां नीचे ।। षट सो पांख ब्रम्हा तां बीचे ।।
जरदी बरण पांखडी खाटी ।। च्यार पांख गणपत की घाटी ।।२४।।

और भी उसके नीचे दो कमल देखे,उसमें(लिंग स्थान के कमल में)छः पंखुडीया है और उस छः पंखुड़ी के कमल में,ब्रम्हा बैठा है ।(ब्रम्हा यह श्रृष्टि की रचना करनेवाला है । वह उस छः पंखुड़ी के कमल में बैठकर,सारी श्रृष्टि की रचना कर रहा है । सारी श्रृष्टि की उत्पत्ती वही से होती है।)उस कमल का रंग पिला है । और उस कमल की पंखुड़ी खट्टी है ।(उसके आगे गुदा घाटपर)चार पंखुड़ी का कमल है ।(वहाँ गणपती रहता है,वहाँ गुदा घाटपर गणपती रहता है ।)वह गणपती का घाट है । ।।२४ ।।

अब तो शब्द पिछम कुं जावे ।। बंक नाळ मीठो रस पावे ।।
उलटया शब्द पिछम दिश आया ।। सुरत शब्द का मेळ थपाया ।।२५।।

अब तो शब्द वहाँ से पश्चिम में जाता है । बंकनाली में मिठा रस मिलता है । बंकनाली से उलटकर शब्द,पश्चिम दिशा आया है । वहाँ सुरत और शब्दका मेल स्थापीत हुआ । ।।२५ ।।

गरजे गिगन धरण सोइ धूजे ।। सार समाय सूर सन्त जूंझे ।।
शब्द पंवाड़ा साद बखाणे ।। सूर मन्डया जाय हदप निसाणे ।।२६।।

(जब शब्द बंकनालसे पश्चिम दिशामें आया),तब उपर गगनमें गर्जना होने लगी और सारी धरणी कांपने लगी। वहाँ बिजल जैसी तलवार(आकाशकी बिजलीसे धरी हुयी लोहेकी तलवार बनाते है,उसे बीजलसार कहते है),धारण करके,मैं शूरवीरके जैसा जूझने लगा। (लड़ाई करने लगा। शब्दोके(पोवाड़े)साधू गाते है। मैं जाकर मोर्चे पर निशाण लिया। ।।२६।।

पांचू पकड़ पगातल दीया ।। जम कूं जीत काल बस कीया ।।
सुरत शब्द मिल चडया आकासा ।। छेद्या मेर गिगन किया बासा ।।२७।।

मैंने पाँचो वैरीयों को पकड़कर,अपने पैर के नीचे दबाया । और यम को जीतकर,काल को अपने वश में कर लिया। वहाँ से सुरत और शब्द मिलकर,आकाश में चढ़ा,मेरू को छेदकर, गगन में जाकर रहा ।। २७ ।।

दोहा ।।

उलटी गंग पयाल सूं ।। जाय लगी असमान ।।
धरण गिगन बिच अेक लिव ।। ऊगा इन्दर भाण ।।२८।।

पाताल से गंगा(ध्वनी)उलटकर,उपर आकाश में जाने लगी । धरणी और गगन के बीच,एक लव लग गयी । और इंद्र और सुर्य उदीत हो गये । ।। २८ ।।

रंरकार की घोर सूं ।। छिक गया सुरग इकीस ।।
सुरत नटणी बरतां चड़ी ।। देख रहया जगदीस ।।२९।।

इस ररंकार की ध्वनीसे,इक्कीसों स्वर्ग छेदे गये । और यह सूरत नटनी जैसी डोरी पर,उपर चढ गयी । और जगदिश को देखने लगी । ।। २९ ।।

चोपाई ।।

मेर मांय थकिया मंमकारा ।। आगे चल्या शब्द रंरकारा ।।
अरध उरध मिलीया सशी सूरा ।। सादि बंटी बज्या छे तूरा ।।३०।।

मेरू में(राम इस शब्दका)म यह अक्षर थक गया । और मेरूके आगे र इस अक्षरकी ध्वनी, आगे चलने लगी। अर्ध और उर्धमें,चन्द्र और सुर्य(इडा और पिंगडा),एकही जगहपर मिलकर (सुषमणा हो गयी ।)तब सूचना समाचार दिया गया । और एक प्रकार का बाजा बजने लगा ।

।। ३० ।।

सुखदेव चडया तृगुटी छाजे ।। तां पर घोर अनाहद बाजे ।।
दीपग माळ झिगा मिग लागी ।। झिळ मिल जोत ब्रम्ह की जागी ।।३१।।

मैं जाकर त्रिगुटी के महल में चढा । उस त्रिगुटी के उपर अनहद शब्द का,घोर आवाज बजने लगा । और दिपकों की माला जैसी,दिपावली के दिन लगाते है । उस दिपक की माला सुशोभित दिखती है । दीप और उस दीपमाला पर लगाये हुए दीए,दूर से बहुत ही सुन्दर दिखते है । उसी प्रकार उस दिपक जैसी,झग-मग लगने लगी । झील-मील ब्रम्ह की ज्योती जग गयी । (लग गयी) ।। ३१ ।।

झिल मिल नूर दसू दिस दरसे ।। प्रेम फुवांर पेप धन बरसे ।।
झिल मिल नूर दसूं दिश भेटया ।। जलम मरण का सांसा मेटया ।।३२।।

वह झिलमिल नूर दसों दिशाओं में मिला । और वहाँ प्रेम के कारंजे उड्ने लगे और फुलोकी घन वर्षा होने लगी,इस प्रकार से वह झील-मील नूर,दशो दिशासे मुझे मिला,तब मेरा जन्म लेने का और मरने की चिन्ता(फिक्र)मिट गयी । ।। ३२ ।।

अळा पिंगळा सेज संवांरे ।। प्राण पुरष तां मेळ पधारे ।।
सुखमण भरे अगम का प्याला ।। पीवत अबधू रहे मतवाला ।।३३।।

इडा और पिंगळा सहज सेज(आंथरून)संवार कर,सफाई से बिछाने लगी । मेरा प्राण पुरूष उस महल में(त्रिगुटी में)गया,वहाँ सुषमना अगम के प्याले,भर-भर कर मुझे पिलाने लगी । वे अगम के प्याले पी-पी कर,मेरा मन मतवाला होकर रहने लगा । ।३३।

प्रेम पियाला पावे पीवे ।। अमर संत जुगे जुग जीवे ।।

सदा सवागण सुन्दर नारी ।। अर्ध नाव सूं लागी यारी ।।३४।।

वे प्रेम का प्याला मुझे पिलाती और स्वयं भी पीती है,वहाँ अमर हूए संत,युगों-युगों तक जीवीत रहते है । (वे संत प्रेम के प्याले खुद भी पीते और दुसरों को भी पिलाते है),वहाँ हमेशा सुहागीन नारी है । (वहाँ जानेवाली आत्मा का पती,कभी भी नही मरता है । और वहाँ पहुँची हुयी आत्मा,विधवा कभी भी होती नही है । वो वहाँ बहोत सुंदर है,उनकी आधा नाम याने सिर्फ र अक्षर से,यारी(प्रीती)लगी है ।। ३४ ।।

सुखमण घठा अमीरस बूठा ।। बरसे हीर हंस बोहो लूठा ।।
सुखमण सीर खीर बोहो मीठा ।। तीन ताप का बुज्या अर्गीठा ।।३५।।

वहाँ सुषमना की बादलसे अमृत की वर्षा होने लगी । वहाँ रं रंकार के हीरे बरसने लगे । वे हीरे हंस(जीव)बहुत लुटने लगा । इस सुषमना की सीर,खीर जैसी बहुत ही मिठी है । वहाँ तीन ताप(अध्यात्म,आधी देव,आदिभुत)(आधी,व्याधी,उपाधी),इन तीनों की आग बुझ जाती है । ।। ३५ ।।

तीन ताप दाजे जग सारा ।। उबऱ्या संत साहिब का प्यारा ।।
भव सागर बिच अमृत बेरी ।। साध सिंगी मछ पावे सेरी ।।३६।।

इन तीनों तापोंमें,सारा जग भुना जाता है । उसमेंसे मैं साहब का प्यारा हूँ ,इसलिए बच गया (बचाया गया)और दूसरे भी संत जो साहेब के प्यारे है,वो भी बचाए जाते है । इस भवसागर के बीच में अमृत का कुँआ है,जैसे समुद्र में सींगी मच्छ नाम का,जानवर रहता है । उसी तरह से साधू लोग,सीगी मच्छ की तरह से,अमृत की सीर पीते है । ।। ३६ ।।

बड़वा अगन नीर सब सोखे ।। इम्रत सीर सिंगी मछ रोखे ।।
तीन लोक मे आण हमारी ।। चोथे देश चलण की त्यारी ।।३७।।

वडवानल(बडवाग्नी)(फास फरस)यह समुद्र के सभी पानी का शोषन करता है । परन्तु समुद्रमें अमृतकी(दूधकी)सीर सींगी मच्छ रोक कर पीता है । अब तीनों लोकोंमें,हमारी (आण)घूमने लगी और हमारी अब चौथे देश में जाने की,तैयारी हूयी । ।।३७।।

पाव बिना निरत करे बोहो नारी ।। बिन रसना तां राग उचारी ।।
ताना करे तांत तुण कावे ।। राग छत्तिस बसंत रूत गावे ।।३८।।

वहाँ पैरो के बिना नारी(नाडीयाँ)बहुत नाचने लगी ।(इन नाडीयों को)जीभ तो नही है । परन्तु राग-रागिणी उच्चारण करने लगी ।(जैसे सितार के तारों को जीभ तो नही है,परन्तु राग उस सितार के तार,राग-रागिणी उच्चारण करते है । उसी तरह मेरे शरीर की नाड़ीयाँ राग-रागिणीयाँ गाने लगी ।)इन नाड़ीयों ने तान तोड़ने लगे ।(जैसे सितार या वीणा का)तार तनका कर(बजाये तो बजने लगता),वैसे ही मेरे शरीर की नाड़ीयाँ तान करने लगी और छत्तीसों राग-रागिणी,वसंत ऋतु के जैसा गाने लगी । ।।३८ ।।

गूगर घोर रिमा झिम लागी ।। भेर सुर नाई मुरली बागी ।।

नोपत घुरे नगारा घाई ।। जे जे शब्द भयो पूर माइ ।।३९।।

घगरी का घणघोर(पैरो के नीचे,घागरी के घनघोर आवाज जैसी)रीम-झिम झन-झनकार लग गयी ।(घागऱ्या तो बांधे बहुत ही रहते है,परन्तु उनकी आवाज एक हो जाती है ।) भेरी(मुँह से फूँक कर बजानेवाला बाजा)सुनायी दिया और मुरली जैसी आवाज बजने लगी । नौबत(मोठा चौघड़ा)बजने लगी । और नगड़ों पर डंका पड़ने लगा । और उस पुरी में जय-जय कार शब्द होने लगा ।। ३९ ।।

संख सत्तार बजे तर बींणा ।। खमायच गावे सुर झीणां ।।
तुती उपंग आरबी बाजे ।। मरदंग ताळ गिगन धुन गाजे ।।४०।।

शंख,सितार,बाजंत्र,वीणा और खमाच राग,बारीक सुर से गाने लगी । और तुँती,उपंग,तासे बजने लगे और मृदुंग के ताल से,गगन में ध्वनी होने लगी ।) ।। ४० ।।

फेरी फिरे फेर री जावे ।। रूप बिना बोहो रूप दिखावे ।।
अनहद झालर लग टिकोरा ।। चन्द बिना तां चुगे चिकोरा ।।४१।।

फेरी घूमती और बहुत खुष करते और रूपके बिना बहुत ही रूप दिखाती और अनहद झालर,(बड़ी घड़ी)उपर ठोके मारने लगे । और वहाँ चन्द्रमाके बिना,चकोर पक्षी बोलने लगा ।।४१।।

सोरठा ।।

सुखम घटा घचन घोर ।। बिन दादर दादर लवे ।।
बोले चात्रक मोर ।। अगम कथा चकवा कवे ।।४२।।

सुषमना की घनघोर घटा उठकर आयी । और मेंढ़क बिना मेंढ़क बोलने लगे । और चातक पक्षी और मोर बोलने लगा । और चकवा अगम की बात कहने लगा । ।। ४२ ।।

झिर मिर बरसे मेह ।। देह सुरत भींजत भई ।।
मोती झडे अछेह ।। बिन बादल बिरखा थई ।।४३।।

और वहाँ रीम-झीम,रीम-झीम वर्षा होने लगी । और में देह सूरत भीग गयी । और वहाँ मोती इतने झड़ने लगे,की उसका अंत ही नही । इतने मोती झड़ने लगे । और बादलों के बिना बारीष हो गयी । ।। ४३ ।।

चोपाई ।।

रूम रूम मे झर हे झरणा ।। रूम रूम बिच पाया सरणा ।।
रूम रूम बोले रंरकारा ।। रूम रूम बिच लगी पुकारा ।।४४।।

और रोम-रोमसे झरने,झरने लगा ।(राम नाम निकलने लगा)और रोम-रोम मित्र मिल गये । तथा रोम-रोम र रंकार शब्द बोलने लगा । और केश-केश से र रंकार की पुकार होने लगी । ।। ४४ ।।

रूम रूम मे झीग मिग नूरा ।। रूम रूम बिच ऊगा सूरा ।।
रूम रूम बिच अगम उजाळा ।। सुरत शब्द मिल रमे निराला ।।४५।।

ओर रोम-रोम में झिल-मिल नूर,रोम-रोम में सुर्य उदय हो गया । और रोम-रोम में अगम (जिसका गम नही),ऐसा उजाला हो गया । वहाँ सूरत और शब्द मिलकर,अलग ही खेलते है । ।। ४५ ।।

कंवळ एक तां हा पांख हजारा ।। कळी कळी बरसे रस न्यारा ।।
अष्ट कंवळ जामेले प्रकासा ।। जां आप ब्रम्ह का बासा ।।४६।।

वहाँ(ब्रम्हरंध्र में)एक हजार पंखुड़ीयों का कमल है। उस हजार पंखुड़ीयों के कमल के, हजार पंखुड़ीयों से,अलग-अलग रस बरसने लगा। उसके बीच अष्ट कमल का प्रकाश किया । वहाँ खुद ब्रम्ह का वास(रहने का ठिकाण)है । ।। ४६ ।।

अनंत कोट फूली गुल क्यारी ।। अनंत भंवर जां करे गुंजारी ।।
अनंत कोट सन्त धर हे ध्याना ।। अनंत कोट प्रकासे ग्याना ।।४७।।

वहाँ अनन्त कोटी फुलवारी खिली है। और उन फुलों पर अनन्त भवरे गुंजार और ध्वनी करते है। और अनन्त कोटी संत ध्यान धरते है और अनन्त कोटी संत ज्ञान बोलकर, ज्ञान का प्रकाश करते है । ।। ४७ ।।

अनंत भोग सुख अनंत बिलासा ।। आ रूत हे छत्त बारे मासा ।।
जे जन कोड ऐसा सुख चावो ।। तो राम राम रसना सूं गावे ।।४८।।

वहाँ अनन्त सुख है। और अनन्त भोग है। और विलास है। ऐसी ऋतु(समय), छत्त (हमेशा),वर्ष के बारहो महीने,ऐसे ही समय रहती है। किसी(संत)जनको ऐसी सुख की इच्छा यदी हो, तो वो राम नाम का गुण,रसना से(जीव्हा से)गावे ।।४८ ।।

राम राम रसना लिव लावे ।। तो चिंन्त्रावण चावे सो पावे ।।
अंछर दोय रकार मकारा ।। या बिच अे सुख देखे सारा ।।४९।।

यदी कोई राम नामकी,रसना से लव लगाये तो। राम नाम यह चिंतामणी जैसा है। जैसे चिंतामणी से मन में चिंतन किया हुआ मिल जाता,इसी प्रकारसे इस राम नामसे चिंतन किया हुआ,प्राप्त होता है। इस राम शब्द के दो अक्षर रा और म है। इन दो ही अक्षरों से, ये सब सुख देख लेता है। ।। ४९ ।।

दोहा ।।

मारग मांहि देख कर ।। पाया सुख बिलास ।।
ओ साझन सुखराम के ।। सिंवरो सास उसास ।।५०।।

रास्ते में,मैं देखकर,इन सुखोंका विलास(भोग)मुझे मिला। इसका यही साधन है। श्वासों-श्वाससे स्मरण करो,यही इसका साधन है। ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले।।५०।।

सुरत सिखर मे रम रही ।। रंरकार सूं बात ।।
ओ समियो सुखराम कह ।। जल्म मरण लग साथ ।।५१।।

मेरी सूरत शिखर में रमण कर रही है । और ररंकार की बात करने लगी । यह ऐसा

समय,मेरे जन्म से लेकर मरने तक,हमेशा मेरे साथ रहेगा,(मेरा ऐसा ही समय,हमेशा रहेगा),ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।५१।।

बरस चोइसे सुध भई ।। कीनी प्रांण पुकार ।।
सुखीया सांई भेजीया ।। गुरू बीरम जिण बार ।।५२।।

मुझे चौविसवें वर्ष में समझ हुयी,तब मेरे प्राण ने पुकार की। तब साई(स्वामी ने)मेरे लिए, गुरू भेज दिया । उस समय बिरमदासजी महाराज आ गये । ।। ५२ ।।

सोरठा ।।

सुरत शब्द बिजोग ।। मन पवना न्यारा रहे ।।
च्यारा मिलण संजोग ।। भक्त जोग ज्यांते कहे ।।५३।।

मेरे सूरत और शब्दका वियोग होता था। (सूरत और शब्द अलग-अलग रहते थे)और मन तथा श्वास भी,अलग-अलग रहते थे । ये चारों(सूरत,शब्द,मन और श्वास)अलग-अलग है। जब ये चारों एक जगह पर,मिलने का संयोग होता है,उसे भक्ती योग कहते है । ।। ५३ ।।

सुरत शब्द सूं मेल ।। मन पवना दोनु गहे ।।
तो लिव लागे जिण बार ।। आठ पहोर इम्रत चवे ।।५४।।

सूरत का शब्द से मेल होकर,मन और श्वास इन दोनों को पकड़ लेते है । ऐसे चारों मिलने का संयोग हुआ,उसे भक्ती योग कहते है । जब राम नामसे लव जिस समय लगेगा,उस समय आंठो प्रहर,रात-दिन अमृत टपकने लगेगा ।। ५४ ।।

।। इति श्री सुख बिलास ग्रंथ सम्पूर्ण ।।